Shri Shivastutih

श्रीशिवस्तुतिः वन्दे शिवं

Document Information

Text title : Shivastutih 2 Vande Devamumapatim 02 13

File name : shivastutiHvandeshivaM.itx

Category : shiva

Location : doc_shiva

Proofread by : Ganesh Kandu, Aruna Narayanan

Description/comments : From Shivastotraratnakara, Gita press, From stotrArNavaH 02-13

Latest update : October 1, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 25, 2021

sanskritdocuments.org

श्रीशिवस्तुतिः वन्दे शिवं

श्रीअरुणाचलस्तोत्रम् च
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १॥

पार्वतीपति भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ, देवताओंके गुरु तथा सृष्टिके कारणरूप परमेश्वर भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ, नागोंको आभूषणके रूपमें तथा हाथमें मृगमुद्रा धारण करनेवाले एवं समस्त जीवोंके गुरुस्वामी भगवान शंकरको मैं नमस्कार करता हूँ, नमस्कार करता हूँ । सूर्य, चन्द्र और अग्निदेवको नेत्ररूपमें धारण करनेवाले भगवान नारायणके परम प्रिय भगवान् शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १॥

वन्दे सर्वजगद्विहारमतुलं वन्देऽन्धकध्वंसिनं
वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम् ।
वन्दे नागभुजङ्गभूषणधरं वन्दे शिवं चिन्मयं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ २॥

जिनके विहारकी पूरे विश्वमें कोई तुलना नहीं है, ऐसे अतुलनीय विहारी भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । अन्धकासुरके हन्ता भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । जो सभी देवताओंके शिरोमणि हैं, जिनकी कान्ति चन्द्रमाके समान है, जिन्होंने अपने शरीरपर नागों और सर्पोंको आभूषणके रूपमें धारण कर रखा है और जो भगवान विष्णुको अत्यन्त प्रिय अपने भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले हैं, ऐसे

वरदानी परम कल्याणस्वरूप चिदानन्द भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २॥

वन्दे दिव्यमचिन्त्यमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं
वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम् ।
बन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभयं वन्देऽतिशान्ताकृतिं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ३॥

अचिन्त्य शक्तिसे सम्पन्न, दिव्य लोकोत्तर, अद्य ब्रह्मस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । सूर्यके अभिमानका दलन करनेवाले, निर्मल स्वरूपवाले, विश्वके मूल कारण भगवान् शंकरकी मैं सतत वन्दना करता हूँ । जो दक्ष प्रजापतिके यज्ञको नष्ट करनेवाले तथा शान्त आकृतिवाले, सत्यस्वरूप, अनन्तस्वरूप, आद्यस्वरूप और सदा निर्भय रहनेवाले एवं भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले हैं, ऐसे वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३॥

वन्दे भूरथमम्बुजाक्षविशिखं वन्दे श्रुतित्रोटकं
वन्दे शैलशरासनं फणिगुणं वन्देऽधितूणीरकम् ।
वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ४॥

त्रिपुरासुरको दग्ध करनेके लिये पृथ्वीको रथ, ब्रह्माको सारथि, सुमेरु पर्वतको धनुष, श्रुतिको त्रोटक, शेषको प्रत्यंचा, आकाशको तूणीर और कमलनयन भगवान विष्णुको बाण बनानेवाले, महाभैरव रूपधारी, भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले तथा वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४॥

वन्दे पञ्चमुखाम्बुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्धगङ्गाधरम् ।
वन्दे भस्मकृतत्रिपुण्डुजटिलं वन्देष्टपूर्त्यात्मकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ५॥

जो पाँच मुखवाले हैं तथा जो अघोर, सद्योजात, तत्पुरुष, वामदेव और ईशानसंज्ञक हैं, उन कमलके समान मुखवाले भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । जिनके तीन नेत्र हैं, जिनका अग्निरूप नेत्र ललाटमें है, ऐसे भगवान शंकरको मैं प्रणाम

करता हूँ । अपने मस्तकपर भगवती गंगा और अर्ध चन्द्रमाको तथा सिरपर मुकुटके रूपमें सुन्दर जटाको धारण किये हैं, ऐसे आकाशकी तरह व्यापक भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । जिन भगवान शंकरकी पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, सूर्य और चन्द्र मतान्तरसे शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव नामक आठ मूर्तियाँ हैं, ऐसे उन भस्मनिर्मित त्रिपुण्डूको जटाके रूपमें धारण करनेवाले भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ । जो भक्त-जनोंके आश्रयदाता हैं, उन वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५॥

वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापहम् ।
वन्दे विप्रसुराचिताङ्घ्रिकमलं वन्दे भगाक्षापहं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ६॥

जो कालको जीतनेवाले, पापका हरण करनेवाले, कण्ठमें विषको धारण करनेवाले, सुख देनेवाले तथा जटामें गंगाजीको धारण करनेवाले व्यापक, दयारूपी अमृतके निधि हैं और शरभरूप धारणकर नृसिंहको लेकर आकाशमें उड़ जानेवाले हैं एवं जिनके चरणकमलोंको वन्दना ब्राह्मण एवं देवता भी करते हैं, जिन्होंने भगाक्ष (इन्द्र) -के दुःखका निवारण किया है तथा जो भक्तोंको आश्रय देनेवाले और वरदानी हैं, ऐसे उन कल्याणस्वरूप भगवान शिवको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६॥

वन्दे मङ्गलराजताद्रिनिलयं वन्दे सुराधीश्वरं
वन्दे शङ्करमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम् ।
वन्दे कुण्डलिराजकुण्डलधरं वन्दे सहस्राननं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ७॥

जो चाँदीके समान शुभ्र एवं मांगलिक हिमालय पर्वतपर रहते हैं, जो सहस्र (अनन्त) -मुखवाले हैं, जो सभी देवताओंके स्वामी हैं, जो कल्याण करनेवाले, अप्रमेय और अतुलनीय हैं एवं शेषनागको जिन्होंने कानोंका कुण्डल बनाया है, यमको पराजित किया है, भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम

करता हूँ ॥ ७॥

वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं
वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थराज्यप्रदम् ।
वन्दे सुन्दरसौरभेयगमनं वन्दे त्रिशूलायुधं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ८॥

जो सूर्यस्वरूप और इन्द्रियोंसे परे हैं, जो कामदेवको भस्म करनेवाले हैं, जो तीन नेत्र होनेके कारण विरूपाक्ष कहे गये हैं, जो सर्वथा अविनाशी हैं, जो धन और राज्यके प्रदाता हैं तथा भूतगणोंके स्वामी हैं, जो सुन्दर वृषवाहनपर आरूढ़ होकर चलते हैं, त्रिशूल ही जिनका आयुध है, ऐसे जो भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकर हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८॥

वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारापहं
वन्दे फूलननन्दिभृङ्गिविनतं वन्दे सुपर्णावृतम् ।
वन्दे शैलसुतार्धभागवपुषं वन्देऽभयं त्र्यम्बकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ९॥

उन महाशिवको प्रणाम है जो सूक्ष्म हैं, अनन्त हैं, जो सबके आद्य हैं और जो निर्भीक हैं; जिन्होंने अन्धकासुरका वध किया है, जिन्हें फूलन, नन्दी और भृंगी प्रणाम अर्पित करते हैं, जो सुपर्णाओं (कमलिनियों) -से आवृत हैं, जिनके आधे शरीरमें शैलसुता पार्वती हैं, जो भक्तोंको निर्भीक करनेवाले हैं, जिनके तीन नेत्र हैं । जो भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले एवं वरदानी हैं, ऐसे कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९॥

वन्दे पावनमम्बरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयामरतरुं वन्दे नताभीष्टदम् ।
वन्दे जह्नुसुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १०॥

जिनका आत्मविभव परम पावन है और आकाशकी तरह व्यापक है, जो देवराज इन्द्रके भी स्वामी हैं, जो भक्तजनोंके लिये कल्पवृक्षके समान आश्रय हैं, जो प्रणाम करनेवालोंको भी अभीष्ट फल प्रदान करते हैं, जिनकी एक पत्नी गंगा और दूसरी पार्वती हैं और जो अनेक

प्रमुख गणोंके भी स्वामी हैं, ऐसे भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं निरन्तर प्रणाम करता हूँ ॥ १०॥

॥ इति श्रीशिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ इस प्रकार श्रीशिवस्तुतिं सम्पूर्ण हुई ॥

Proofread by Ganesh Kandu, Aruna Narayanan

Shri Shivastutih

pdf was typeset on July 25, 2021

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*